क्या भारत की आर्थिक सफलता रेत के महल पर टिकी है?

दशकों तक औसत 7% जीडीपी की आर्थिक वृद्धि के बावजूद, भारत एक चौंकाने वाली वास्तविकता का सामना कर रहा है: तीन प्रमुख शक्तियों पर रणनीतिक निर्भरता जो रातोंरात देश को पंगु बना सकती है। क्या होता है जब आपके 70% कुशल पेशेवर विदेशी वीजा पर निर्भर करते हैं, आपकी सेना विदेशी हथियारों पर निर्भर करती है, और आपकी अर्थव्यवस्था आयातित घटकों पर चलती है?

प्रधान मंत्री मोदी की गुजरात में हाल की चेतावनी एक सच्चाई को उजागर करती है जिसका सामना अधिकांश भारतीय नहीं करना चाहते - हमारी गौरवशाली स्वतंत्रता काफी हद तक एक भ्रम है।

वैश्विक मंच पर हम अभी भी क्यों टुकड़ों के लिए तरस रहे हैं?

चीन की पकड़

स्मार्टफोन से लेकर फार्मास्युटिकल्स तक, भारत महत्वपूर्ण घटकों का आयात करता है जो रातोंरात पूरे उद्योगों को बंद कर सकते हैं। हमारा "मेक इन इंडिया" का सपना चीनी पुर्जों पर निर्भर करता है।

रूसी निर्भरता

60-70% सैन्य उपकरण रूस से आते हैं। तेल आयात कुल खरीद का 40% तक पहुँच गया था। एक प्रतिबंध व्यवस्था हमारे रक्षा और ऊर्जा क्षेत्रों को पंगु बना सकती है।

अमेरिकी सपने का जाल

70% एच-1बी वीजा भारतीयों को मिलते हैं। हमारे सर्वश्रेष्ठ दिमाग विदेश भाग जाते हैं जबकि हम स्वदेशी लड़ाकू विमानों के लिए अमेरिकी तकनीक पर निर्भर हैं। रणनीतिक स्वायत्तता या रणनीतिक गुलामी?

भारत की कमज़ोरी को उजागर करने वाले चौंकाने वाले आंकड़े

70%

H-1B वीज़ा निर्भरता

भारतीय अमेरिकी कुशल श्रमिक वीज़ा पर हावी हैं, जिससे प्रतिभा पलायन और अमेरिकी आप्रवासन नीति पर आर्थिक निर्भरता पैदा होती है।

60-70%

सैन्य उपकरण

महत्वपूर्ण रक्षा प्रणालियाँ रूसी आपूर्ति पर निर्भर करती हैं, लड़ाकू जेट विमानों से लेकर तीनों सशस्त्र सेवाओं में नौसैनिक जहाजों तक।

40%

तेल आयात चरम पर

रूस 2022 में केवल 4% से बढ़कर भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बन गया, जिससे रिफाइनरियां मॉस्को पर अत्यधिक निर्भर हो गईं।

ये सिर्फ़ आँकड़े नहीं हैं - ये वे जंजीरें हैं जो भारत की संप्रभुता को बांधती हैं। हर प्रतिशत बिंदु हजारों नौकरियों, अरबों के राजस्व और विदेशी शक्तियों द्वारा रखे गए रणनीतिक लाभ का प्रतिनिधित्व करता है।

BOOK SALE
Ojaank
FLAT 200 RS DISCOUNT
ON COMBO OF 6 BOOKS
Order Now
Coupon : BOOKS 200
CALL : 8750711100/22/33/44/55

जब संगीत बंद हो जाए तो क्या होगा?

भारत खुद को एक असंभव विदेश नीति के चौराहे पर पाता है। सीमा विवादों को लेकर चीन को नाराज करो, और महत्वपूर्ण विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखलाएं ध्वस्त हो जाती हैं। यूक्रेन को लेकर रूस को नाराज करो, और तेल की कीमतें आसमान छूने लगती हैं जबकि रक्षा आधुनिकीकरण रुक जाता है। शुल्कों या ईरान संबंधों को लेकर अमेरिका को नाराज करो, और तकनीकी क्षेत्र अपनी जीवन रेखा खो देता है जबकि छात्रों को वीजा प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है।

राष्ट्रपति ट्रम्प की व्यापार युद्ध की धमकियों ने पहले ही इस कमजोरी को उजागर कर दिया है। जब विदेशी नेता एक ही नीतिगत निर्णय से भारत की अर्थव्यवस्था को बंधक बना सकते हैं, तो हमारी तथाकथित रणनीतिक स्वायत्तता कहाँ है?

> "यह उतना ही बड़ा वेक-अप कॉल है जितना 1989 में सोवियत संघ का पतन था।"

विनिर्माण क्रांति जो कभी नहीं आई – क्यों?

कठोर वास्तविकता

1990 के दशक के सुधारों के बाद औसत 7% जीडीपी वृद्धि के बावजूद, भारत का विनिर्माण क्षेत्र गति पकड़ने से इनकार कर रहा है। निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां चुनौती का सामना नहीं कर रही हैं, जिससे देश दुर्लभ पृथ्वी धातुओं से लेकर दवा सामग्री तक हर चीज के लिए आयात पर निर्भर है।

समस्या नीति की कमी नहीं है – यह विनिर्माताओं के बीच "पशु भावना" की अनुपस्थिति है। जबकि चीन दुनिया का कारखाना बन गया, भारत विनिर्माण के सपनों के साथ एक सेवा अर्थव्यवस्था बना रहा।

समाधान के लिए सरकारी पहलों से कहीं अधिक की आवश्यकता है – इसके लिए व्यावसायिक मानसिकता और जोखिम लेने की भूख में एक मौलिक बदलाव की आवश्यकता है।

क्या भारत बिना टूटे मुक्त हो सकता है?

विनिर्माण क्रांति

सेमीकंडक्टर से लेकर फार्मास्यूटिकल्स तक, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना, आयात पर निर्भरता कम करना।

आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण

चीन-रूस-अमेरिका त्रिकोण से परे दुर्लभ पृथ्वी, ऊर्जा और महत्वपूर्ण घटकों के लिए वैकल्पिक आपूर्तिकर्ताओं का विकास करना।

निर्यात बाजार विस्तार

उभरती अर्थव्यवस्थाओं और क्षेत्रीय भागीदारों के साथ व्यापार संबंध विकसित करके अमेरिकी बाजारों पर निर्भरता कम करना।

प्रतिभा प्रतिधारण रणनीति

H-1B सपनों के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाले घरेलू अवसर पैदा करना, भारत के बेहतरीन दिमागों को देश में ही रखना।

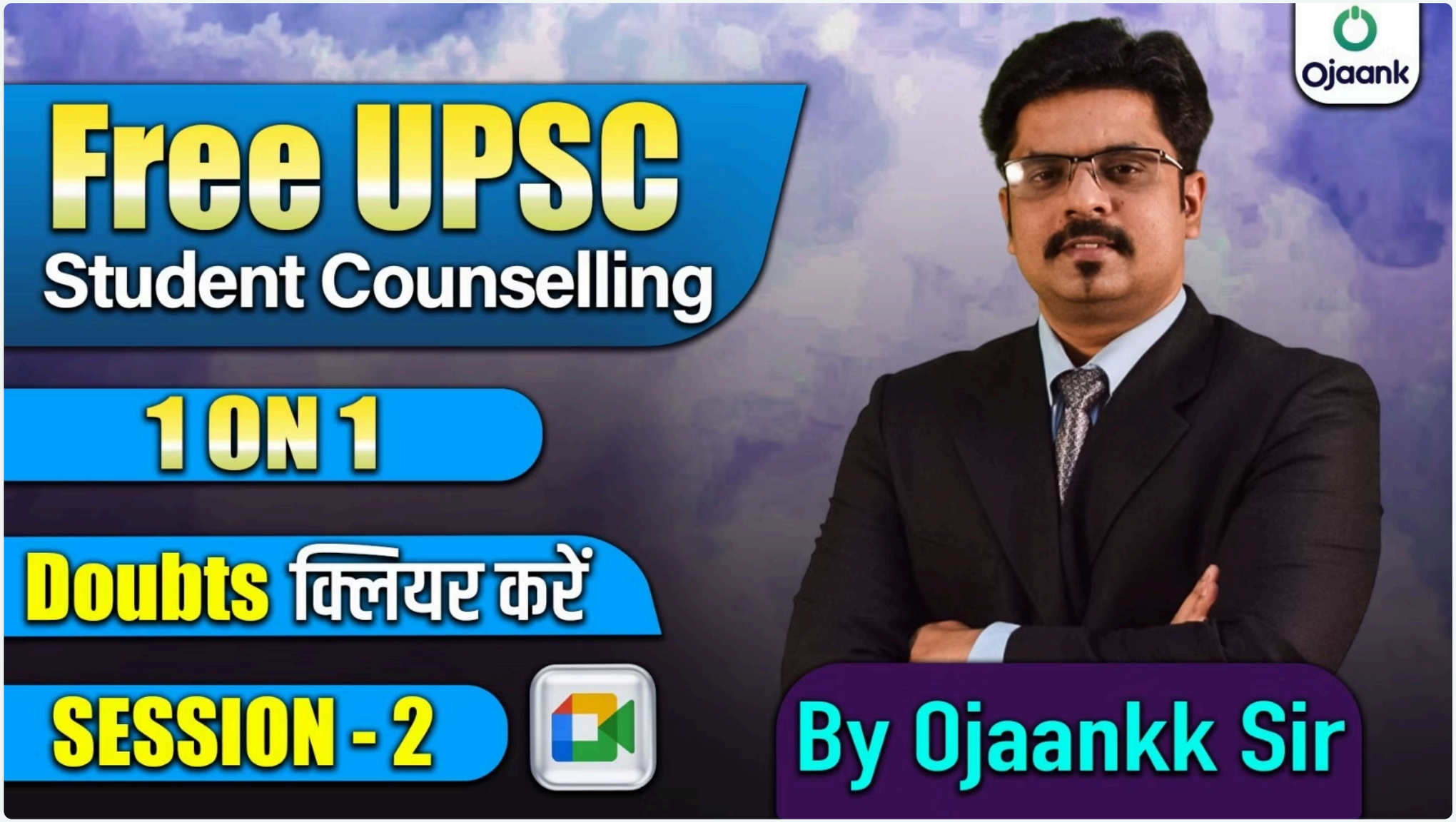

UPSC में बार-बार fail क्यों हो रहे हो ❓ क्योंकि strategy गलत है, सिर्फ मेहनत नहीं चाहिए ✅

आपकी बारी: सच्ची स्वतंत्रता के लिए आप क्या बलिदान देंगे?

त्वरित सर्वेक्षण: यदि आपको गारंटीशुदा एच-1बी वीज़ा और भारत में अनिश्चित संभावनाओं के साथ एक स्टार्टअप बनाने के बीच चयन करना पड़े, तो आप किसे चुनेंगे?

चुनौतीपूर्ण प्रश्न: तीन ऐसे चीनी उत्पादों के नाम बताएं जिनका आप प्रतिदिन उपयोग करते हैं और जिनका निर्माण भारत में घरेलू स्तर पर किया जा सकता है। कुछ भी नहीं सोच पा रहे? ठीक यही समस्या है।

वास्तविकता की जाँच: भारत में असेंबल किया गया हर iPhone अभी भी चीनी घटकों पर निर्भर करता है। हर "स्वदेशी" लड़ाकू विमान को अमेरिकी इंजनों की आवश्यकता होती है। हर मध्यमवर्गीय परिवार विदेशी शिक्षा और ग्रीन कार्ड का सपना देखता है।

सच्ची स्वतंत्रता का मार्ग केवल सरकारी नीति के बारे में नहीं है - यह व्यक्तिगत विकल्पों के बारे में है। क्या हम उन्हें बनाने के लिए तैयार हैं?

भारत के अगले 75 वर्षों को परिभाषित करने वाला चुनाव

कठिन सत्य

रणनीतिक निर्भरता से मुक्ति 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों से भी कठिन होगी। इसके लिए अल्पकालिक आराम का त्याग करके दीर्घकालिक संप्रभुता प्राप्त करनी होगी।

अवसर

भारत के पास सच्ची रणनीतिक स्वायत्तता बनाने के लिए प्रतिभा, बाजार का आकार और लोकतांत्रिक संस्थाएं हैं। सवाल क्षमता का नहीं – इच्छाशक्ति का है।

मोदी की चेतावनी सिर्फ राजनीतिक बयानबाजी नहीं है – यह कार्रवाई का आह्वान है। अगला दशक यह तय करेगा कि भारत वास्तव में एक स्वतंत्र शक्ति बनता है या एक परिष्कृत ग्राहक राज्य बना रहता है। चुनाव हमारा है, लेकिन समय निकल रहा है।

आप क्या चुनेंगे?

Ojaank

Free PDF Content

पाने के लिए अभी JOIN करें

IAS with Ojaankk Sir

Ojaankk_Sir

IAS with Ojaankk Sir

8285894079

8285894079

www.ojaank.com/